17 मई 2011, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
पथप्रदर्शक
ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान देखिये
जी-जागरण पर
प्रतिदिन प्रातः 6.40 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 34, अंक : 4 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये
मई (द्वितीय), 2011 (वीर नि. संवत्-2537) सह-सम्पादक : पण्डित संजीवकुमार गोधा वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

हमें किसी वाद-विवाद में नहीं पड़ना है, मात्र सत्य का ज्ञान कराना है।

(पूज्य श्रीकानजी स्वामी स्मारक ट्रस्ट, देवलाली के ट्रस्टियों की ओर से हमें एक परिपत्र प्राप्त हुआ है, जिसका वितरण पूज्य गुरुदेवश्री की जयन्ती के अवसर पर देवलाली में किया गया था और जो गुरुप्रसाद के अगले अंक में प्रकाशित होने जा रहा है।

हमसे भी यह अनुरोध किया गया है कि हम हमारे यहाँ से प्रकाशित पत्र-पत्रिकाओं में इसे छापें। उनके अनुरोध को ध्यान में रखकर यह प्रकाशित किया जा रहा है। - सह-संपादक)

विगत 28-29 वर्ष से मुम्बई में आध्यात्म स्टडी सर्कल की ओर से श्वेताम्बर पर्यूषण के समय पर्यूषण व्याख्यानमाला चल रही है, जिसमें अधिकांश श्रोता श्वेताम्बर तथा मुमुक्षुभाई सुनने आते हैं। यह तो आप जानते ही हैं कि इन श्रोताओं को आध्यात्मिक चर्चा सुनने के अतिरिक्त किसी बात में रस नहीं है। अध्यात्म स्टडी सर्कल के संस्थापक श्री दिनेशभाई मोदी हैं।

आरंभ में दो-चार वर्ष अन्य वक्ता भी प्रवचन करने के लिए आते थे; किन्तु श्रोताओं का रस अध्यात्म में ही अधिक होने से अपने प्रवचनकार विद्वान श्रीलालचंदभाई मोदी राजकोट, बाबू युगलकिशोरजी 'युगल' कोटा, डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर, पंडित ज्ञानचंदजी विदिशा, डॉ. उत्तमचंदजी जैन सिवनी, पण्डित हिम्मतभाई जोबालिया, पण्डित प्रकाशचंदजी जैन 'हितैषी', पंडित शशिभाई, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, ब्र.जतीशभाई दिल्ली, पण्डित कस्तूरचंदजी बेगमगंज, पण्डित प्रदीपकुमारजी झांझरी आदि आते थे।

इन सब विद्वानों के प्रवचन मुम्बई भारतीय विद्या भवन चौपाटी, बालकेश्वर, तारदेव, मस्जिदबंदर तथा मुम्बई के उपनगर माटुंगा, घाटकोपर, विलेपार्ले, दादर आदि अनेक स्थानों पर होते थे और ये प्रवचन आज भी चालू ही हैं।

यह व्याख्यानमाला 28-29 वर्ष से चल रही है और लोग इसमें तत्त्व की सच्ची बात जानने के लिये आते हैं।

इसके प्रभाव से श्वेताम्बर श्रोताओं की दिगम्बर धर्म के प्रति रुचि जागृत हुई और उन्होंने विचार किया कि लोनावाला में स्वयं के खर्चे से एक मन्दिर बनाना और उसमें स्वयं के खर्चे से एक दिगम्बर प्रतिमा स्थापित करना चाहिये। स्वयं दिगम्बर विधि से अपरिचित होने से अपने (दिगम्बर) प्रतिष्ठाचार्यों को वेदीप्रतिष्ठा कराने के लिए बुलाया। मूल प्रतिमा प्रतिष्ठा तो भिण्ड में पहले ही हो गयी थी।

इस वेदीप्रतिष्ठा के अवसर पर उन्हीं में से एक श्रोता को पूज्य गुरुदेवश्री कानजी स्वामी के प्रति बहुमान आने पर अपने खर्चे से पूज्य गुरुदेवश्री की प्रतिमूर्ति (स्टेच्यु) एक करोड़ रुपये खर्च करके लगाने की घोषणा की गई।

इतनी सीधी-सच्ची बात को द्वेषभाव से विकृत करके प्रस्तुत करना - यह बात ब्रह्मचारियों को शोभा नहीं देती। आत्मकल्याण की भावना से ब्रह्मचर्य व्रत लिया और अभी कैसी प्रवृत्ति कर रहे हैं - इस बात से समाज भलीभाँति परिचित है।

ये लोग व्यक्तिद्वेष से पीड़ित होकर नये-नये वितण्डावाद शुरु करते हैं। कभी तो किसी का सम्मान होते देखकर बुराई करते हैं, कभी संघ बनाते हैं और कभी पैसा इकट्ठा करने की प्रवृत्ति में जुट जाते हैं।

उक्त संदर्भ में पण्डित टोडरमलजी का निम्नांकित कथन देखने योग्य है -

''अव्रती को करने योग्य प्रभावनादि धर्मकार्य कहे हैं, उन्हें व्रती होकर करे तो पाप ही बाँधेगा। व्यापारादि आरम्भ छोड़कर चैत्यालयादि कार्यों का अधिकारी हो - यह कैसे बनेगा ?'' **- मोक्षमार्ग प्रकाशक पृष्ठ ३००**

(शेष पृष्ठ 8 पर...)

स्वामीजी पर हमारी दृढ श्रद्धा है

हमें श्री दिनेशभाई मोदी, मुम्बई का वर्तमान सन्दर्भों में एक पत्र जैनपथप्रदर्शक में प्रकाशित करने हेतु प्राप्त हुआ है जो अविकल रूप से इसप्रकार है -

आदरणीय संपादक महोदय, जैनपथप्रदर्शक जयपुर,

आचार्य कुन्दकुन्द और महाराज साहेब श्री कानजी स्वामी पर हमारी दृढ श्रद्धा है और पिछले 29 वर्षों से हम उनके अनुयायी विद्वानों के प्रवचन सुनते हैं और उनका साहित्य पढते हैं। इसके फलस्वरूप और हमारे उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए हमने कार्ला-लोनावाला में अल्केश दिनेश मोदी अध्यात्म कैम्पस में स्थित भगवान महावीर स्वामी के जिनमंदिर में अप्रैल 2011 में भगवान आदिनाथ की दिगम्बर मूर्ति की प्रतिष्ठा की है।

उनकी पूजन भक्ति भक्तिभाव से पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के विद्वान पण्डितों के आदेश अनुसार दिगम्बर तेरापंथ विधि से करते हैं और करते रहेंगे और इस बारे में भविष्य के लिए पक्की व्यवस्था की है।

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल एवं अभयकुमारजी आदि विद्वानों ने इस कार्य में जो सहयोग दिया है, उसके लिये हम उनके आभारी हैं और भविष्य में सहयोग की कामना करते हैं।

- दिनेश मोदी, मुम्बई

सम्पादकीय – 56

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा– ८७

विगत गाथा में अधर्मद्रव्य का विस्तार से वर्णन किया।

अब प्रस्तुत गाथा में भी धर्मद्रव्य एवं अधर्मद्रव्य के अस्तित्व के विषय में कहते हैं। मूल गाथा इसप्रकार है –

जादो अलोगलोगो जेसिं सब्भावदो य गमणठिदी।
दो वि य मया विभत्ता अविभत्ता लोयमेत्ता य ।।८७।।

(हरिगीत)

धरम अर अधरम से ही लोकालोक गति-स्थिति बने।
वे उभय भिन्न-अभिन्न भी अर सकल लोक प्रमाण है।।८७।।

जीव-पुद्गल की गति स्थिति तथा लोक-अलोक का विभाग – उक्त दोनों द्रव्यों के सद्भाव से ही होता है और वे दोनों द्रव्य विभक्त-अविभक्त तथा लोक प्रमाण कहे गये हैं।

आचार्य अमृतचन्द्रदेव कहते हैं कि इस गाथा में धर्म व अधर्म द्रव्य के सद्भाव की सिद्धि के लिये हेतु दर्शाया है। धर्म-अधर्म द्रव्य विद्यमान हैं, अन्यथा लोक व अलोक का विभाग नहीं बन सकता था। धर्म व अधर्म – दोनों परस्पर पृथक् अस्तित्व से निष्पन्न होने से भिन्न-भिन्न हैं तथा एक क्षेत्रावगाही होने से अभिन्न भी हैं। समस्त लोक में प्रवर्तमान जीवों-पुद्गलों को गति-स्थिति में निष्क्रिय रूप से अनुग्रह करते हैं, इसलिए निमित्त होते हुए लोकप्रमाण हैं।

कवि हीरानन्दजी अपनी काव्य की भाषा में कहते –

(सवैया इकतीसा)

जीवाजीव छहों दर्व जामैं एकवृत्ति रूप,
सोई लोकाकास मान लोक मांहि लोक है।
तातैं धर्माधर्म दोनों लोक परमान कहै,
जीव पुद्गल जातैं याही माहीं रोक है।।
लोक तैं अलोक परंपरा है अनादि ही को,
सुद्धाकास एक धर्माधर्म कौ कहै।
तातैं जो विभाग किया लोकालोक दौनौं रूप,
सो तौ धर्माधर्म तैं है जैनी वानी जो कहै।।३८३।।

(दोहा)

लोकालोक अनादि नभ, एक अखण्ड अपार।
धर्म अधर्म अनादि तैं, भया विभेद विचार।।३९०।।

सवैया ३८३ एवं दोहा ३९० में कवि ने कहा है कि जिसमें जीवाजीव आदि छहों द्रव्य एक वृत्तिरूप से रहते हैं। वह लोकाकाश हैं। धर्म व अधर्म द्रव्य – दोनों लोक प्रमाण हैं, इसी कारण जीव पुद्गल भी अपनी स्वभावगत वैसी योग्यता से अनादि-उपादान एवं धर्म-अधर्म द्रव्य के निमित्त से लोकाकाश में ही रहते हैं। यह लोक व अलोक की परम्परा से है। छह द्रव्यों के ऊपर मात्र अकेला अनन्त आकाश है।

यहाँ व्याख्यान करते हुए गुरुदेवश्री कानजीस्वामी कहते हैं कि ''यदि कोई **प्रश्न** करें कि धर्मद्रव्य अधर्म मानने की क्या जरूरत है? जबकि आकाश द्रव्य ही गति व स्थिति में सहायक हैं।

उत्तर :– यह लोक मर्यादावाला है, सीमित है; जहाँ तक छह द्रव्य हैं, वहाँ तक ही लोक है, बाकी खाली स्थान अलोक है।

आकाश द्रव्य के ऐसे दो भाग माने बिना यथार्थ वस्तु स्थिति नक्की नहीं होती। जैसे जड़ व चेतन-दोनों भिन्न हैं, वैसे ही लोक व अलोक दोनों भिन्न हैं। लोक-अलोक अपने स्वयं के कारण हैं उसमें धर्म अधर्म द्रव्य को निमित्त के रूप में सिद्ध किया है। धर्म-अधर्म द्रव्य हैं तो अवश्य। यदि ये दोनों द्रव्य न हों तो – लोक-अलोक का भेद सिद्ध नहीं होता। जहाँ जीवादिक समस्त पदार्थ हैं, उसे लोक कहते हैं। आकाश का क्षेत्र अनन्त है, उसमें असंख्य योजन तक लोक है, पश्चात् जहाँ अकेला आकाश है, उसे अलोक कहते हैं।

इसप्रकार लोक-अलोक का भेद छह द्रव्यों के कारण ही है। ●

पत्राचार पाठ्यक्रम परीक्षा जून 2011 में –

प्रथम सेमेस्टर परीक्षा कार्यक्रम

श्री टोडरमल दि.जैन मुक्त विद्यापीठ परीक्षाबोर्ड, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15 के प्रथम सेमेस्टर की परीक्षायें जून 2011 के अंतिम सप्ताह में होने जा रही है। संबंधित परीक्षार्थी इसी अनुसार तैयारी करते हुए परीक्षा देवें।

द्विवर्षीय पाठ्यक्रम उपाध्याय के विषय

प्रथमवर्ष : 1. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग - 1
2. छहढाला+सत्य की खोज

द्वितीयवर्ष : 1. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-1
2. लघु जैन सिद्धांत प्रवेशिका

त्रिवर्षीय सिद्धांत विशारद परीक्षा के विषय

प्रथमवर्ष : 1. गुणस्थान विवेचन
2. क्रमबद्धपर्याय+सामान्य श्रावकाचार

द्वितीयवर्ष : 1. समयसार (जीवाजीवाधिकार)
2. गोम्मटसार कर्मकाण्ड

तृतीयवर्ष : 1. समयसार (कर्ताकर्माधिकार)
2. गोम्मटसार जीवकाण्ड (70 से 215 गाथा तक)
(97 से 112 गाथा छोड़कर)

संबंधित परीक्षार्थी को अथवा ग्रुप प्रभारी को परीक्षाबोर्ड द्वारा 20 जून 2011 तक डाक द्वारा प्रश्नपत्र सामग्री भेज दी जावेगी।

– ओ. पी. आचार्य (प्रबंधक)

गुरुदेवश्री की जयन्ती संपन्न

1. जयपुर (राज.) : यहाँ पण्डित टोडरमल स्मारक भवन में दिनाँक 7 मई को गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की जन्म जयन्ती अत्यंत उत्साह और उमंग के साथ मनाई गई।

सभा की अध्यक्षता श्री शांतिलालजी जैन अलवरवालों ने की। मुख्यअतिथि के रूप में श्री ताराचंदजी सोगानी जयपुर एवं प्रमुख वक्ता के रूप में पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल मंचासीन थे।

इस अवसर पर प्रमुख वक्ता पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल ने गुरुदेवश्री की महिमा करते हुए कहा कि उनके द्वारा होने वाला अध्यात्म का प्रचार–प्रसार तो श्रेष्ठ था ही, साथ ही उनका व्यावहारिक पक्ष भी बहुत मजबूत था। प्रतिदिन सायं 4 से 5 बजे तक 1 घंटा जिनेन्द्रदेव की भक्ति करते थे। उनका सदाचार भी बहुत मजबूत था। गुरुदेवश्री का तत्त्वज्ञान आज बहुत बढ गया है, इसका प्रतिफल है कि आज अनेक संस्थाएं इस कार्य में संलग्न हैं।

मुख्य अतिथि श्री ताराचंदजी सोगानी ने अपने वक्तव्य में गुरुदेवश्री के अनंत उपकार को स्मरण करते हुए कहा कि यदि गुरुदेवश्री को तत्त्वज्ञान न मिलता और वे दिगम्बर धर्म को न अपनाते तो आज तत्त्वप्रचार का ऐसा मजबूत कार्य कैसे हो पाता, जो आज दिखाई दे रहा है।

अध्यक्षीय भाषण देते हुए श्री शांतिलालजी ने कहा कि हमारे जीवन के बदलने का आधार गुरुदेवश्री द्वारा प्राप्त तत्त्वज्ञान ही है।

सभा में फैडरेशन के राष्ट्रीय मंत्री श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्रीमती कमला भारिल्ल एवं महाविद्यालय के छात्र प्रतिनिधि के रूप में सर्वज्ञ भारिल्ल ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये। श्रीमती सुशीला जैन ने काव्यपाठ किया।

कार्यक्रम का संचालन पण्डित सोनूजी शास्त्री ने किया।

2. उदयपुर (राज.) : यहाँ चन्द्रप्रभ दिगम्बर जैन चैत्यालय, मुमुक्षु मण्डल मुखर्जी चौक के स्वाध्याय भवन में दिनाँक 6 मई को गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की जयन्ती बहुत धूमधाम से मनाई गई।

इस अवसर पर महिला फैडरेशन मुमुक्षु मण्डल द्वारा प्रात: प्रभात फेरी निकाली गई।

सायंकाल 'सत्पुरुष कानजीस्वामी के जीवन दर्शन एवं सिद्धांत' विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसमें वक्ताओं के रूप में श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री (प्रदेश अध्यक्ष–अ.भा.जैन युवा फैडरेशन), पण्डित खेमचंदजी शास्त्री (उदयपुर जिला प्रभारी–युवा फैडरेशन), श्री हीरालालजी अखावत (मन्दिर अध्यक्ष), श्री रंगलालजी बोहरा ने कानजीस्वामी के जीवन दर्शन पर प्रकाश डालते हुए महिलाओं एवं युवाओं को स्वामीजी के सिद्धांतों को अपने जीवन में आत्मसात करने की प्रेरणा दी। गोष्ठी के पश्चात् श्रोताओं द्वारा खुला प्रश्न मंच का आयोजन किया गया, जिसमें वक्ताओं ने अनेक साधर्मियों की अनेक शंकाओं का निराकरण किया।

गोष्ठी का संचालन पण्डित तपिशजी शास्त्री ने किया।

– कमल गदिया, उदयपुर

३. देवलाली–नासिक (महा.) : यहाँ श्री कानजी स्वामी स्मारक ट्रस्ट द्वारा दिनांक 1 से 5 मई तक गुरुदेवश्री कानजी स्वामी की 122वीं जन्म जयन्ती अत्यंत हर्षोल्लास के साथ संपन्न हुई।

इस अवसर पर प्रात: तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा ग्रन्थाधिराज समयसार के पुण्य–पाप अधिकार पर मार्मिक व्याख्यानों का लाभ मिला। दोपहर में पण्डित विरागजी शास्त्री द्वारा समयसार के 211वें कलश व 412वीं गाथा पर प्रवचन हुये एवं रात्रि में पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री द्वारा 'दृष्टि का निधान' के आधार पर प्रवचन हुये। इसके पश्चात् रात्रि में सिद्धायतन–द्रोणगिरि के बालकों द्वारा अनेक सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये।

कार्यक्रम में 170 तीर्थंकर विधान का आयोजन किया गया। साथ ही प्रतिदिन गुरुदेवश्री के समयसार गाथा 49 पर सी.डी. प्रवचनों का भी लाभ मिला।

कार्यक्रम के अन्तिम दिन दिनांक 5 मई को गुरुदेवश्री की जन्म जयन्ती के उपलक्ष्य में प्रात: प्रभात फेरी निकाली गई तथा गुणानुवाद सभा का आयोजन किया गया, जिसमें ब्र.हेमचंदजी हेम, पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री, पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा, पण्डित विरागजी शास्त्री, ब्र.रमाबेन, ब्र.बासंती बेन ने अपने प्रासंगिक उद्गार व्यक्त किये। इस अवसर पर श्री मुकुन्दभाई मेहता, श्री कान्तिभाई मोटाणी, श्री सुमनभाई दोशी, श्री प्रवीणभाई वोरा इत्यादि महानुभाव विशेष रूप से उपस्थित थे।

इस अवसर पर पण्डित विरागजी शास्त्री द्वारा तैयार नवीन वीडियो एनीमेशन सी.डी. ''भगवन बनने जन्मे हम'' का लोकार्पण डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा किया गया।

विधि–विधान के समस्त कार्य पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं श्री दीपक जैन 'धवल' भोपाल द्वारा संपन्न कराये गये।

– उल्लासभाई जोबालिया

बाल संस्कार एवं प्रवेश शिविर संपन्न

सोनगढ (गुज.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दिगम्बर जैन विद्यार्थी गृह के प्रांगण में श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा दिनांक 25 से 28 अप्रैल 2011 तक प्रथम बाल संस्कार शिविर अनेक उपलब्धियों के साथ संपन्न हुआ।

शिविर में पण्डित रमेशजी मंगल, ब्र.पुष्पलताबेन झांझरी, ब्र.समता झांझरी, ब्र.ज्ञानधारा झांझरी, पण्डित विरागजी शास्त्री, पण्डित राकेशजी शास्त्री, श्रीमती कामना जैन द्वारा विभिन्न कक्षाओं का संचालन किया गया। पण्डित रजनीभाई दोशी, पण्डित सुनीलजी शास्त्री राजकोट, डॉ.ममता जैन बांसवाड़ा द्वारा विशेष कक्षाओं का लाभ मिला। साथ ही पण्डित इन्दुभाई मोरबी, पण्डित मीठाभाई दोशी के प्रवचनों का भी लाभ मिला।

इस शिविर में लगभग 200 बच्चों ने भाग लिया। दैनिक कार्यक्रमों में प्रतिदिन नित्य–नियम पूजन के अतिरिक्त सामूहिक कक्षाओं, ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों आदि का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर रात्रि में वीतराग–विज्ञान पाठशाला, राजकोट, मुमुक्षु मण्डल नवरंगपुरा अहमदाबाद एवं विद्यार्थी गृह सोनगढ के बच्चों द्वारा विशेष कार्यक्रमों का प्रदर्शन किया गया। शिविर में साक्षात्कार और उनकी प्रतिभा के आधार पर नवीन छात्रों को विद्यार्थी गृह में प्रवेश दिया गया। प्रवेश संबंधी संपूर्ण चयन प्रक्रिया पण्डित देवेन्द्रजी जैन के संयोजन में संपन्न हुई।

कार्यक्रम के अंतिम दिन विद्यार्थी गृह के नवीन छात्रावास एवं आत्मार्थी भवन का शिलान्यास संपन्न हुआ। इस अवसर पर श्री दि.जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट, सोनगढ के प्रमुख श्री हंसमुखभाई वोरा, श्री राजूभाई कामदार, श्री विपिनभाई वाधर आदि विशेष रूप से उपस्थित थे। शिलान्यासकर्ता के रूप में श्री अनंतराय ए. सेठ और श्री निमेष भाई शाह सपरिवार उपस्थित थे।

कार्यकारिणी पुनर्गठित

भोपाल (म.प्र.) : यहाँ स्वाध्याय भवन चौक में दिनाँक 28 फरवरी को अ.भा.जैन युवा फैडरेशन भोपाल की कार्यकारिणी का पुनर्गठन किया गया। कार्यकारिणी निम्नानुसार है ह्न

अध्यक्ष–श्री जिनेशजी भंडारी, **मंत्री–**श्री आशुतोषजी जैन, **महामंत्री–**श्री मनोजजी जैन (आर.एम.), **उपाध्यक्ष–**श्री संदीपजी सोगानी, **वरिष्ठ उपाध्यक्ष–**पण्डित अनिलकुमारजी जैन (इंजी.), **कार्याध्यक्ष–**श्री राजीवजी मोदी, **कोषाध्यक्ष–**श्री मोहितजी बड़कुल, **संगठन मंत्री–**श्री लोकेशजी जैन, **सह संगठन मंत्री–**श्री सिद्धार्थजी जैन, **सांस्कृतिक मंत्री–**श्री दीपकजी धवल, **प्रचार मंत्री–**श्री संजीवजी मोदी, **संरक्षक–**श्री हुकुमचंदजी जैन, श्री देवेन्द्रजी बड़कुल व श्री सुरेशजी जैन (भज्जू), **शाखा सचेतक–**श्री आशीषजी जैन दलाल चुने गये।

पाठशाला निरीक्षण संपन्न

श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक पण्डित करण शाह बड़ौदा द्वारा दिनाँक 28 मार्च से 1 मई तक मध्यप्रदेश की विभिन्न पाठशालाओं का निरीक्षण किया गया। आपने प्रत्येक गांव में प्रवचन व कक्षा द्वारा समाज को लाभान्वित किया।

आपके द्वारा पाठशाला के महत्व पर प्रकाश डालते हुए बहुत समय से बंद पड़ी हुई पाठशालाओं को फिर से चालू करने एवं पाठशाला की गतिविधियाँ बढाने हेतु प्रेरित किया गया। साथ ही नवयुवकों को टोडरमल महाविद्यालय में प्रवेश लेने हेतु प्रेरित किया गया। आपने गुना, शिवपुरी, अशोकनगर, सागर, जबलपुर, छिंदवाड़ा, भोपाल आदि जिलों के लगभग 35 स्थानों पर पाठशाला का निरीक्षण किया।

पोस्टर विमोचन संपन्न

अ.भा.जैन युवा फैडरेशन के तत्त्वावधान में सर्वोदय अहिंसा अभियान के अन्तर्गत पानी बचाओ की प्रेरणा देने वाले पोस्टर का विमोचन दिनांक 16 अप्रैल को रामलीला मैदान, जयपुर में आयोजित एक धर्मसभा में श्री दीपेन्द्रसिंह शेखावत (अध्यक्ष–राजस्थान विधानसभा) एवं श्रीमती ज्योति खण्डेलवाल (महापौर–जयपुर) ने किया। इस अवसर पर राजस्थान जैन सभा के अध्यक्ष श्री महेन्द्रजी पाटनी सहित अनेक प्रबुद्धजन उपस्थित थे।

– संजय शास्त्री, बड़ामलहरा

ब्र. यशपालजी द्वारा तत्त्वप्रचार

1. भोपाल (म.प्र.) : यहाँ कोहेफिजा में दिनाँक 11 से 22 अप्रैल एवं 25 से अप्रैल से 10 मई तक गुणस्थान विवेचन की कक्षायें ली गई। इस दौरान गुणस्थान का संपूर्ण विषय लिया गया। सभी लोगों ने भविष्य में भी लब्धिसार के स्वाध्याय हेतु आने के लिए निवेदन किया है।

2. ध्रुवधाम–बांसवाड़ा (राज.) : यहाँ दिनाँक 23 अप्रैल को मोक्षमार्गप्रकाशक पर प्रवचन का लाभ मिला।

दिनांक 24 अप्रैल को अकलंक महाविद्यालय के शास्त्री अंतिमवर्ष के विद्यार्थियों के विदाई समारोह के अवसर पर मुख्य अतिथि के रूप में उद्बोधन हुआ।

3. रतलाम (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 24 अप्रैल को मुमुक्षु मण्डल में मुनिधर्म और श्रावकधर्म विषय पर प्रवचन हुआ।

रेडियो पर इन्टरव्यू संपन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ दैनिक भास्कर के रेडियो चैनल माय एफ.एम. में दिनाँक 5 मई को अ.भा.जैन युवा फैडरेशन के राज.प्रदेश अध्यक्ष श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री उदयपुर ने अन्तरराष्ट्रीय चिकन डे (मुर्गी के बच्चों को बचाना) पर 'अण्डा शाकाहारी है या मांसाहारी' विषय पर बोलते हुए 'अण्डा मांसाहारी ही है' सिद्ध किया।

कार्यक्रम में लगभग 1 घण्टे के इन्टरव्यू में विपक्षी बन्धु ताहिर अली हुसैन को भी अन्त में श्री जिनेन्द्रजी शास्त्री का समर्थन करना पड़ा। इस इन्टरव्यू को 'सलाम उदयपुर' नामक कार्यक्रम में प्रात: 10 से 11 बजे तक उदयपुर संभाग के सभी जिलों में सीधा प्रसारित किया गया, जिसे हजारों लोगों ने सुना।

श्राविका सभा का आयोजन

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक वीतराग–विज्ञान महिला मण्डल बापूनगर जयपुर द्वारा महावीर जयन्ती की पूर्व संध्या पर दिनाँक 15 अप्रैल को श्राविका सभा का आयोजन किया गया।

सभा की अध्यक्षता श्रीमती आशा दीवान ने एवं संचालन श्रीमती सुशीलाजी जैन (अध्यक्ष–महिला मण्डल) ने किया। सभा में रोचक तत्त्व चर्चाओं द्वारा भगवान महावीर द्वारा बताये गये सिद्धांतों को कैसे धारण करें एवं कैसे अपनायें ? – यह बात बताई गई। **– स्तुति जैन, सुनीता जैन**

बुन्देलखण्ड यात्रा संपन्न

दिल्ली : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान दि.जैन युवा फैडरेशन शिवाजी पार्क, शाहदरा के तत्त्वावधान में महावीर जयन्ती के अवसर पर दिनाँक 15 से 18 अप्रैल तक बुन्देलखण्ड यात्रा का आयोजन किया गया।

इस यात्रा में लगभग 55 साधर्मियों ने द्रोणगिरी, देवगढ, बानपुर, आहारजी, पपौराजी आदि अनेक स्थानों की यात्रा की।

यात्रा का संचालन पण्डित विकासजी शास्त्री एवं मनोजजी ने किया।

अक्षय तृतीय पर्व मनाया

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में वीतराग–विज्ञान महिला मण्डल जयपुर द्वारा अक्षय तृतीया के अवसर पर भगवान आदिनाथ के जीवन परिचय पर प्रश्नोत्तर के माध्यम से श्रीमती सुशीलाजी जैन अलवर द्वारा एक मनोरंजक पार्सल गेम का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता श्रीमती ईलाजी सेठी द्वारा की गई। **– स्तुति जैन, प्रमीला जैन**

स्वाध्याय मण्डल की यात्रा संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ स्वाध्याय मण्डल जौहरी बाजार द्वारा दिनाँक 29 अप्रैल से 1 मई तक तीर्थयात्रा का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर सिद्धांतक्षेत्र–दिल्ली, बड़ागांव, खेकड़ा, हस्तिनापुर एवं मंगलायतन की यात्रा की गई। तीनों दिन भक्तिभावपूर्वक वन्दना, स्तुति, प्रवचन, प्रश्नमंच एवं धार्मिक गेम आदि कार्यक्रम हुये।

यात्रा में लगभग 50 आत्मार्थियों ने लाभ लिया। खेकड़ा व मंगलायतन में संघ का विशेष स्वागत हुआ। संघ के प्रेरणास्रोत श्री कमलचन्दजी मुशरफ थे। सभी कार्यक्रम पण्डित संजीवकुमारजी गोधा के निर्देशन में श्री ओमजी जैन एवं श्री सुशीलजी जैन के सहयोग से सम्पन्न हुये। यात्रा में पण्डित संजयजी सेठी का सान्निध्य रहा।

फैडरेशन की राजस्थान यात्रा का विज्ञापन

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार

74 बीसवाँ प्रवचन – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

आत्मज्ञान से शून्य ये व्यवहाराभासी लोग अपनी शक्ति का विचार किये बिना ही बड़ी-बड़ी प्रतिज्ञायें ले लेते हैं और फिर या तो उन्हें छोड़ देते हैं या फिर जैसे-तैसे उन्हें ढोते रहते हैं।

ऐसे लोगों का मार्गदर्शन करते हुए पण्डितजी लिखते हैं –

''जैनधर्म में प्रतिज्ञा न लेने का दण्ड तो है नहीं। जैनधर्म में तो ऐसा उपदेश है कि पहले तो तत्त्वज्ञानी हो; फिर जिसका त्याग करे, उसका दोष पहिचाने; त्याग करने में जो गुण हो, उसे जाने; फिर अपने परिणामों को ठीक (विचार) करे; वर्तमान परिणामों के ही भरोसे प्रतिज्ञा न कर बैठे; भविष्य में निर्वाह होता जाने तो प्रतिज्ञा करे; तथा शरीर की शक्ति व द्रव्य, क्षेत्र, काल, भावादिक का विचार करे। इसप्रकार विचार करके फिर प्रतिज्ञा करनी। वह भी ऐसी करनी जिससे प्रतिज्ञा के प्रति निरादरभाव न हो, परिणाम चढते रहें। ऐसी जैनधर्म की आम्नाय है।[१]''

पण्डित टोडरमलजी ने प्रतिज्ञा लेने या नहीं लेने के संबंध में एकदम संतुलित दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है।

व्यवहाराभासियों की असंतुलित असत्क्रियाओं का एक यह चित्र भी देखिये –

''तथा सर्वप्रकार से धर्म को न जानता हो – ऐसा जीव किसी धर्म के अंग को मुख्य करके अन्य धर्मों को गौण करता है। जैसे – कोई जीव दया धर्म को मुख्य करके पूजा-प्रभावनादि कार्य का उत्थापन करते हैं; कितने ही पूजा-प्रभावनादि धर्म को मुख्य करके हिंसादिक का भय नहीं रखते; कितने ही तप की मुख्यता से आर्तध्यानादिक करके भी उपवासादि करते हैं, तथा अपने को तपस्वी मानकर नि:शंक क्रोधादि करते हैं; कितने ही दान की मुख्यता से बहुत पाप करके भी धन उपार्जन करके दान देते हैं; कितने ही आरम्भत्याग की मुख्यता से याचना आदि करते हैं; इत्यादि प्रकार से किसी धर्म को मुख्य करके अन्य धर्म को नहीं गिनते तथा उसके आश्रय से पाप का आचरण करते हैं।

उनका यह कार्य ऐसा हुआ जैसे अविवेकी व्यापारी को किसी व्यापार में नफे के अर्थ अन्य प्रकार से बहुत टोटा पड़ता है।

चाहिए तो ऐसा कि जैसे व्यापारी का प्रयोजन नफा है, सर्व विचार कर जैसे नफा बहुत हो, वैसा करे; उसीप्रकार ज्ञानी का प्रयोजन वीतराग भाव है, सर्व विचार कर जैसे वीतरागभाव बहुत हो, वैसा करे; क्योंकि मूलधर्म वीतरागभाव है।[२]''

उक्त एक वाक्यखण्ड (पैराग्राफ) में स्वयं को धर्मात्मा माननेवाले व्यवहाराभासियों द्वारा धर्म के एक-एक अंग पर किसप्रकार प्रहार किया जाता है, उनका निषेध किया जाता है – यह स्पष्ट कर दिया है।

उनका स्पष्ट मत है कि जिसप्रकार जीवदया के नाम पर पूजा-प्रभावनादि कार्यों का निषेध नहीं किया जा सकता; उसीप्रकार पूजा-प्रभावना के नाम पर अहिंसा (जीवदया) का ध्यान रखे बिना बड़े-बड़े अनावश्यक आडम्बर पूर्ण क्रियाकाण्ड किया जाना भी उचित नहीं है।

जिसप्रकार तप की मुख्यता से आर्तध्यानादि करके भी उपवासादि करना उचित नहीं है; उसीप्रकार उपवासादि करके अपने को तपस्वी मानकर अनर्गल क्रोधादि करने की भी छूट नहीं दी जा सकती, दान करने की भावना से पाप करके भी धन उपार्जन करने की छूट नहीं दी जा सकती, आरंभत्याग के नाम पर याचना करने की अनुमति नहीं दी जा सकती।

व्यापारी का उदाहरण देते हुए पण्डितजी कहते हैं कि जिसप्रकार व्यापारी व्यापार में लाभ-हानि का ध्यान रखता है; उसीप्रकार आत्मार्थियों को भी लाभ-हानि का ध्यान रखते हुए धर्माचरण करना चाहिए।

धर्मसाधना का तो एकमात्र प्रयोजन वीतरागभाव का पोषण है; क्योंकि मूल धर्म तो वीतरागभाव नहीं है। अत: उनका स्पष्ट आदेश है कि धर्म के नाम पर वे कार्य ही किये जाने चाहिए कि जिनमें सर्वांग वीतरागभाव की ही पुष्टि होती हो।

पण्डितजी तो यहाँ तक कहते हैं कि –

''तथा कितने ही जीव अणुव्रत-महाव्रतादिरूप यथार्थ आचरण करते हैं और आचरण के अनुसार ही परिणाम हैं, कोई माया-लोभादिक का अभिप्राय नहीं है; उन्हें धर्म जानकर मोक्ष के अर्थ उनका साधन करते हैं, किन्हीं स्वर्गादिक के भोगों की भी इच्छा नहीं रखते; परन्तु तत्त्वज्ञान पहले नहीं हुआ, इसलिए आप तो जानते हैं कि मैं मोक्ष का साधन कर रहा हूँ; परन्तु जो मोक्ष का साधन है, उसे जानते भी नहीं, केवल स्वर्गादिक ही का साधन करते हैं।

कोई मिसरी को अमृत जानकर भक्षण करे तो उससे अमृत का गुण तो नहीं होता; अपनी प्रतीति के अनुसार फल नहीं होता; फल तो जैसे साधन करे, वैसा ही लगता है।

शास्त्र में ऐसा कहा है कि चारित्र में 'सम्यक्' पद है; वह अज्ञान पूर्वक आचरण की निवृत्ति के अर्थ है; इसलिए प्रथम तत्त्वज्ञान हो और पश्चात् चारित्र हो सो सम्यक्चारित्र नाम पाता है।

जैसे –कोई किसान बीज तो बोये नहीं और अन्य साधन करे तो अन्न प्राप्ति कैसे हो, घास-फूस ही होगा; उसीप्रकार अज्ञानी तत्त्वज्ञान का तो अभ्यास करे नहीं और अन्य साधन करे तो मोक्ष प्राप्ति कैसे हो, देवपद आदि ही होंगे।[१]''

उक्त कथन से यह बात अत्यन्त स्पष्ट है कि भले ही हमारा आचरण शास्त्रानुसार हो, फिर भी यदि तत्त्वज्ञान नहीं है, आत्मानुभव नहीं है, सम्यग्दर्शन नहीं है तो वह आचरण सम्यक्चारित्र नाम प्राप्त नहीं करता, वह मुक्ति का कारण भी नहीं है।

इसप्रकार व्यवहाराभासी की सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यक्चारित्र संबंधी परिणति कैसी होती है – इसका निरूपण हुआ।

(क्रमश:)

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २३९ २. वही, पृष्ठ २४१

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, सातवाँ अधिकार, पृष्ठ २४१-२४२

लोनावाला : एक प्रतिक्रिया

– मनोहर मारवडकर, नागपुर

अभी-अभी एक पत्र प्राप्त हुआ, उसमें डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल ने जो लोनावाला में एक ही वेदी पर श्वेताम्बर प्रतिमाओं के साथ-साथ दिगम्बर जिनप्रतिमा को प्रशस्ति सहित विराजमान किया, उस पर आपत्ति की है।

यह प्रतिमा अन्य स्थान से प्रतिष्ठित कराकर लोनावाला के मंदिर में श्वेताम्बर प्रतिमाओं के साथ स्थापित की गई है और वह भी अलग से वेदी प्रतिष्ठा कराकर। यह मुमुक्षु समाज की मान्यता के विरुद्ध हुआ, ऐसा लिखा है। फोटो में डॉ. भारिल्ल उसी मंदिर में सामायिक ध्यान करते दिखते हैं। क्या वहाँ उनके स्वाध्याय ध्यानादि करने से वे गुरुदेवश्री से बिछुड़ गये ?

वे श्वेताम्बर पर्युषण पर्व में अध्यात्म स्टडी सर्कल में प्रवचनार्थ जाते हैं। वहाँ श्वेताम्बर मूर्तियाँ नहीं होंगी। इस तरह का हठाग्रह योग्य नहीं लगता।

ऐसे मन्दिर पहले से विराजमान हैं, जहाँ श्वेताम्बर तथा दिगम्बर प्रतिमाएं एकसाथ विराजित हैं। जैसे बैतूल (म.प्र.) में कोठीबाजार में स्थित जैन मंदिर में एक ही वेदी पर मूलनायक और दाहिनी ओर श्वेताम्बर प्रतिमाएं हैं और बायीं ओर दिगम्बर प्रतिमाजी हैं। मैं वहाँ दो साल तक सेवाकाल में रहा; किन्तु दोनों श्वेताम्बर और दिगम्बर अपनी-अपनी परंपरानुसार पूजनें आदि करते हैं। उनमें कोई विरोध नहीं है। यह व्यवस्था कम से कम 70-80 साल पुरानी है या उससे भी पुरानी हो सकती है। वहाँ कोई विवाद या मनमुटाव नहीं है। दोनों अपनी-अपनी परंपरानुसार पर्युषण पर्वादि मनाते हैं। मैंने भी वहाँ पूजन प्रभावनादि किये, प्रवचन भी किये।

श्रीमद् राजचन्द्र आश्रम, अगास में भी ऐसी ही व्यवस्था है; किन्तु दिगम्बर प्रतिमाएं अन्यत्र विराजमान हैं। वह भी ब्र. शीतलप्रसादजी द्वारा प्रतिष्ठित हैं। इसीतरह अभी-अभी 7-8 साल पहले यवतमाल (महा.) में श्रीमद् राजचंद्र प्रणाली में एक सनातन मंदिर बना है, जिसमें नीचे श्वेताम्बर प्रतिमाएं और ऊपर दिगम्बर प्रतिमाएं हैं। स्वयं श्रीमद् राजचंद्र ने समयसार की प्राप्ति पर मुट्ठीभर हीरे-मोती प्रदाता को दिये थे और ईडर के प्रवास में उन्होंने द्रव्यसंग्रह को खोजकर उसके अध्ययन की प्रेरणा दी थी।

स्वाध्याय-मनन हेतु जिन बीस ग्रन्थों की सूची 'श्रीमद् राजचंद्र' ग्रंथ में दी है, उनमें उन्नीस ग्रंथ दिगम्बरों के और दिगम्बर प्रणाली सम्मत हैं और सिर्फ एक श्वेताम्बर प्रणाली का है।

एकत्र प्रतिमाएं रहने में कोई विरोध तो नहीं होना चाहिए। यह केवल विद्वानों का मताग्रह है। वास्तव में श्वेताम्बर स्थानकवासी ही पूज्य गुरुदेवश्री को सुनना और दिगम्बर प्रतिमाओं का दर्शन-पूजनादि करना चाहते हैं, वे इस ओर झुकते हैं। वे ज्ञानपूर्वक यह चाहते हुए भी परंपराओं के वश श्वेताम्बर प्रतिमाओं को पूजते हैं। वे भी दिगम्बर प्रतिमाओं को दिगम्बर पद्धति से ही पूजते हैं। उसमें भी वे नवांगी या षोडषांगी अभिषेकादि नहीं करते।

यदि दिगम्बर लोग अज्ञानतावश श्वेताम्बर मूर्तियों को पूजते हैं, तो यह उनके घोर अज्ञानता की महिमा है; किन्तु मुमुक्षु तो ज्ञानी हैं, वे केवल दिगम्बर प्रतिमाओं को ही पूजेंगे। वे श्वेताम्बर प्रतिमाओं को नहीं पूजते और पूजेंगे भी नहीं। अन्यथा वे सच्चे मुमुक्षु ही नहीं। ●

दिगम्बर-श्वेताम्बर प्रतिमाएं एक साथ

जैनधर्मशाला मेरठ में दिनांक 11 मई 2011 को जैनपथप्रदर्शक के लिए एक इन्टरव्यू पण्डित सोनूजी शास्त्री द्वारा पण्डित धनसिंहजी 'ज्ञायक' पिड़ावा से लिया गया, जो इसप्रकार है –

सोनू शास्त्री – हमने सुना है कि आप दिल्ली के एक ऐसे जैनमन्दिर में प्रवचन करने के लिये गये थे; जिसमें दिगम्बर-श्वेताम्बर मूर्तियाँ एक साथ वेदी पर विराजमान हैं ?

धनसिंहजी – हाँ, गये थे; जतीशभाईजी (ब्र.जतीशचंदजी शास्त्री) ने भेजा था; इसलिए गये थे; पर इसमें है क्या ?

सोनू शास्त्री – है तो कुछ नहीं; पर आपने कुछ कहा नहीं ?

धनसिंहजी – कहा था, यह कहा था कि यह क्या है ? हमें यहाँ क्यों भेजा ? इस पर जतीशभाई ने कहा कि ऐसा होता है। स्थान को देखकर ऐसा करना पड़ता है; पर तुम्हें तो मात्र प्रवचन करना है।

इसप्रकार हम वहाँ गये, पर्यूषण में दस दिन तक दिन में तीन बार प्रवचन किये। अच्छी धर्मप्रभावना हुई।

सोनू शास्त्री – यह कबकी बात है ?

धनसिंहजी – लगभग 10 साल पूर्व की।

सोनूजी – यह स्थान कहाँ है ?

धनसिंहजी – न्यू राजेन्द्रनगर, नई दिल्ली

सोनूजी – कितने श्रोता आते थे ?

धनसिंहजी – दिगम्बर-श्वेताम्बर कुल मिलाकर 250-300 श्रोता आते थे।

सोनूजी – यह मन्दिर कब बना, कितना पुराना होगा ?

धनसिंहजी – अनुमान से लगभग 30 साल।

सोनूजी – सब कुछ मिलाकर आपको कैसा लगा ?

धनसिंहजी – मुझे बहुत अच्छा लगा, लोगों ने चित्त से तत्त्व की बात सुनी और प्रसन्नता व्यक्त की। ●

हार्दिक बधाई !

सूरत निवासी श्री धनकुमारजी गोधा द्वारा जयपुर में अपने नूतन गृह प्रवेश की पूर्व संध्या पर भक्ति एवं पाठ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल के सारगर्भित प्रवचन का लाभ मिला।

दिनाँक 13 मई को पण्डित संजीवकुमारजी गोधा द्वारा गृहप्रवेश की विधि संपन्न कराई गई। इसके उपलक्ष्य में पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट को 1100/- रुपये प्राप्त हुये। एतदर्थ धन्यवाद !

आगामी कार्यक्रम...

सम्पादक संघ का अधिवेशन मुम्बई में

अखिल भारतीय जैन पत्र सम्पादक संघ का राष्ट्रीय अधिवेशन 5 व 6 जून को महानगर मुम्बई में आयोजित है। इस अवसर पर नए अध्यक्ष का चयन किया जाएगा। दिनाँक 6 जून को श्रुतपंचमी के अवसर पर संगोष्ठी भी आयोजित है। सभी सदस्यों से पधारने का सानुरोध आग्रह है। आवास, भोजन आदि की समुचित व्यवस्था है। **– अखिल बंसल**

(पृष्ठ 1 का शेष...)

तात्पर्य यह है कि ब्रह्मचारियों को व्यापारादि छोड़कर मंदिर-धर्मशाला बनाने आदि में प्रवृत्त होना योग्य नहीं है।

इस व्याख्यानमाला का आयोजन करने वाले दिनेशभाई मोदी का गुरुदेवश्री के प्रति जो अभिप्राय है, वह आत्मधर्म (गुजराती) मार्च 1981 अंक 449 में इसप्रकार प्रकाशित हुआ था।

''धर्म तो मात्र कानजी स्वामी के पास है

महाराज साहब (आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी) के पहले मैंने पाँच-छह प्रवचन सुने, पर मैं उनकी बात कुछ न समझ पाया और बात न समझ पाने से, औरों की तरह उनकी उपेक्षा कर मैं अपने पुराने अभिप्राय को कायम रख सकता था; परन्तु वकील होने के कारण मैंने ऐसा नहीं किया।

अतः महाराजश्री की बात को पूर्ण समझने का दृढ़ निश्चय किया और इसके लिए मैंने तीन साल सतत प्रयत्न चालू रखकर स्वामीजी के प्रवचन सुनें और अभ्यास किया ।

फलस्वरूप मैं जब सही वस्तुस्थिति से परिचित हुआ, तब मुझे अपने पिछले व्यवहार और बर्ताव पर बहुत पश्चात्ताप हुआ और मुझे धिक्कार भरी आत्मग्लानि हुई, अपने पूर्व विचारों से मैं शर्मिन्दा हुआ और मैंने महाराजश्री (स्वामीजी) के प्रति अन्तःकरण से माफी मांगी और मेरे हृदय में महाराज श्री (स्वामीजी) के प्रति अत्यन्त आदर और पूज्यभाव हुआ।

मुझमें इतना परिवर्तन देखकर कई लोगों को आश्चर्य हुआ। मैं जगह-जगह कहने लगा कि **सारे भारत में कहीं सच्चा धर्म है तो श्री कानजीस्वामी के पास है। - दिनेश जैन मोदी,** एडवोकेट - सुप्रीम कोर्ट, मुम्बई

देवलाली ट्रस्ट का उद्देश्य मात्र पूज्य गुरुदेवश्री के तत्त्वज्ञान का प्रचार-प्रसार करना ही है। हमारे पते पर रजिस्टर्ड पोस्ट से उन लोगों का एक परिपत्र आया है। इसी कारण हमें यह सब लिखना पड़ रहा है। बाकी वाद-विवाद में उलझना हमारे ट्रस्ट का उद्देश्य नहीं है। **-ट्रस्टीगण**

पूज्य श्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट , देवलाली-मुम्बई

वेदी प्रतिष्ठा सानन्द संपन्न

मेरठ (उ.प्र.) : यहाँ मौ. तीरगरान जैन समाज के आयोजकत्व में श्री महावीर जयन्ती भवन में दिनांक 9 से 13 मई तक वेदी प्रतिष्ठा व त्रिकलशारोहण कार्यक्रम आचार्य भारतभूषण एवं एलाचार्य क्षमाभूषण व क्षुल्लक संयमभूषणजी महाराज के सानिध्य में सम्पन्न हुआ।

इस अवसर पर महाराजश्री के प्रवचनों के अतिरिक्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा **'जैनदर्शन अकर्तावाद है'** व **'हम आत्म ध्यान कैसे करें'** विषयों पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। इनके अतिरिक्त पण्डित धनसिंहजी ज्ञायक पिड़ावा एवं पण्डित प्रकाशचंदजी सकारिया ज्योतिर्विद मैनपुरी के प्रवचनों का भी लाभ मिला।

विधि-विधान के समस्त कार्य पण्डित अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री खनियांधाना एवं सहयोगी के रूप में पण्डित अनिलजी 'धवल' भोपाल, पण्डित निखिलजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित अकलंकदेव जैन मंगलार्थी, पण्डित शाकुलजी शास्त्री मेरठ एवं पण्डित ऋषभकुमारजी शास्त्री दिल्ली ने संपन्न कराये। सम्पूर्ण कार्यक्रम पण्डित सोनूजी शास्त्री जयपुर के कुशल निर्देशन में संपन्न हुये।

युवा फैडरेशन का 33 वाँ राष्ट्रीय अधिवेशन

(रविवार, दिनांक 22 मई 2011)

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन का तेंतीसवाँ राष्ट्रीय अधिवेशन रविवार, दिनांक 22 मई 2011 को जयपुर (राज.) में आयोजित होने जा रहा है। अधिवेशन में फैडरेशन द्वारा अब तक किये गये कार्यों की समीक्षा तथा आगामी कार्यक्रमों की रूपरेखा तय की जायेगी।

इस अधिवेशन में फैडरेशन की शाखाओं के सदस्य तो उपस्थित होंगे ही आप सभी आत्मार्थी महानुभाव भी इस अवसर पर सादर आमंत्रित हैं।

कृपया अपने आगमन की पूर्व सूचना निम्नांकित सम्पर्क सूत्रों पर अवश्य देवें, ताकि आपके आवास एवं भोजन की समुचित व्यवस्था की जा सके।

सम्पर्क सूत्र -

पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल, महामंत्री-युवा फैडरेशन -
Mob. : 9870016988, E-Mail : parmatmb@yahoo.com
पण्डित पीयूषकुमार शास्त्री, संगठन मंत्री-युवा फैडरेशन,
श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15
Mob. : 9785643202. E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

15 मई से 1 जून	जयपुर	प्रशिक्षण शिविर
3 जून से 24 जुलाई	विदेश	धर्मप्रचारार्थ (U.K.-U.S.A.)
31 जुलाई से 9 अगस्त	जयपुर	वर्षाकालीन शिविर

नोट : विदेश का विस्तृत कार्यक्रम विगत अंक में दिया जा चुका है।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

प्रकाशन तिथि : 13 मई 2011

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,** डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127